P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4*(Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

प्रभा खेतान की कृतियों में 'स्त्री–विमर्श' (बाजार के बीचः बाजार के खिलाफ भूमण्डलीकरण और स्त्री के प्रश्न के संदर्भ विशेष में)

रामयज्ञ मौर्य
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग
मेरठ कॉलेज,
मेरठ

सारांश

'स्त्री–विमर्श' कोई नया विषय नहीं है पर वर्तमान हिन्दी साहित्य में इसे प्रगति–प्रयोगवादी साहित्य के 'लघुमानव' से कहीं अधिक 'स्पेस' मिल रहा है। इसे विविध व्यापक रूप में बहुआयामी दृष्टिकोण से लिखा–पढ़ा और विचारा जा रहा है। आज साहित्यकारों विशेषकर महिला साहित्यकारों का मुख्य विषय तो स्त्री विमर्श ही है। प्रभा खेतान हिन्दी जगत में एक ऐसी लेखिका हैं जिनकी लेखनी पूरी तरह 'स्त्री–मुक्ति' को समर्पित थी। उनकी एक अति महत्वपूर्ण कृति 'बाजार के बीच : बाजार के खिलाफ–भूमण्डलीकरण और स्त्री के प्रश्न' सन् 2004 में प्रकाशित हुई जो भूमण्डलीकरण के दौर में वैश्विक स्थितियों में 'स्त्री–विमर्श' का संग्रहणीय दस्तावेज है। एशिया विशेषतः भारत की स्त्रियों की दशा का आकलन इस कृति को एक गम्भीर समाजिक अध्ययन और स्त्री–विमर्श के महत्वपूर्ण ग्रन्थ के रूप में प्रस्थापित करता है। यद्यपि दुनिया काफी आगे बढ़ चुकी है पर 'स्त्री श्रम' का उचित प्रतिदाय अभी स्त्री को नहीं मिलता है। स्त्री को घर और बाहर दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है लेकिन उसको उचित लाभ या सम्मान नहीं मिल पाता। टेस्ट ट्यूब बेबी, शुक्राणु बैंक, कृत्रिम गर्भाधान, सेरोगेट मदर और लिविंग रिलेशनशिप इत्यादि नये समाजिक प्रयोगों ने नैतिक और कानूनी अधिकारों के बारे में पुनः विचार करने को बाध्य कर दिया है।

मुख्य शब्द : स्त्री विमर्श, प्रभा खेतान, भूमण्लीकरण और स्त्री।

प्रस्तावना

हमने नारी को 'पृथ्वी' कहा ताकि वह सब कुछ सहे। हमने उसे 'सीता' बनाया ताकि वह पुरूषों की सेवा करे और उसके अत्याचारों को चुपचाप सहन कर ले। हमने उसे 'देवी' की संज्ञा दी ताकि वह सुने सबकी कहे कुछ न। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' जी हाँ पुरूष स्वयं देवता बन अपने रमण के लिए स्त्रियों की पूजा का भी विधान रचा (देवदासी परम्परा और क्या है?)। पुरूष वर्चस्ववादी सामाजिक संरचना के बावजूद भारतीय समाज में एक दूसरी धारा भी विद्यमान रही है जिसने स्त्री सशक्तीकरण या स्वतन्त्र, तेजस्वी चरित्र की स्त्रियों की बेहतरीन मिशालें पेश की है। वैदिक, रामायण, महाभारत काल से मध्यकाल तक देखें तो ऐसी कई विद्रोही तेजस्वी स्त्रियों के दर्शन होते हैं जिनसे आधुनिक युग की स्त्रियाँ भी बहुत कुछ सीख सकती हैं।"[1]

यदि हम स्थिर चित्त से और गौरपूर्वक सोचें तो यही कहेंगे कि भारतीय चिन्तन और साहित्य की परम्परा में 'स्त्री विमर्श' बहुत प्राचीन है। हाँ, यह शब्द बंध अवश्य नया है। इतना अवश्य कहूँगा कि मध्यकाल तक स्त्री विमर्श केवल पुरूषों का चिन्तन विषय था, इस संदर्भ में स्त्रियों की भागीदारी नगण्य थी पर आधुनिक समय में 'स्त्री विमर्श' के जंग–ए–मैदान में पुरूषों के साथ–साथ महिलाएँ भी एक सशक्त योद्धा की तरह सार्थक भूमिका का निर्वहन कर रही हैं। इतना ही नहीं अब तो नारीवादी एक वर्ग स्वीकार करता है कि स्त्रियों द्वारा स्त्रियों के विषय में किया गया विमर्श ही वास्तविक 'स्त्री विमर्श' है। आधुनिक युग में पाश्चात्य चकाचौंध के कारण आयातित वस्तुओं का महत्व काफी बढ़ गया है। तमाम साहित्यक वादों (छायावाद, रोमांसवाद, यथार्थवाद, आदर्शवाद, व्यक्तिवाद, आधुनिकता और उत्तर आधुनिकतावाद, विखण्डनवाद तथा संरचनावाद आदि) की तरह 'आधुनिक भारतीय स्त्री विमर्श' को भी आयातित माना जा सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य

'भूमण्डलीकरण' का व्यापक बहुआयामी प्रभाव पड़ा है, दुनिया तेजी से बदल रही है। सामाजिक परम्पराएं टूट रही हैं, मान्यताएं बदल रही हैं। स्त्रियों के प्रति लोगों की सोच बदल रही है। स्त्रियों की दशा और दिशा पर इस भूमण्डलीकरण का, बाजार वाद का क्या प्रभाव परिलक्षित हो रहा है? प्रभा खेतान की कृतियों के आलोक में देखना, इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

'बैटी फ्रीडन' अमेरिकी नारीवाद की जन्मदात्री मानी जाती हैं। इनकी पुस्तक 'द फेमिनिन मिस्टीक' (1963) नारी मुक्ति आन्दोलन की घोषणापत्र मानी जाने लगी। यद्यपि इसके पहले 'सीमेन द बौउवार' की बहुचर्चित पुस्तक 'गोल्डन नोटबुक' (1962) ने उन्हें बोल्ड लेखिका के तौर पर पहचान दिलायी। 'केट मिलट' की पुस्तक 'द सेक्सुअल पोलिटिक्स' (1969) और ' जर्मेन ग्रीर' की पुस्तक 'द फीमेल यूनक' (1970) अमेरिका समाज में बाइबिल की तरह पढ़ा गया। देवेन्द्र इस्सर के अनुसार "उत्तर आधुनिक समय के उदयकाल में 'पर्सनल इज पोलिटिकल का नारा बुलन्द हुआ और नारी समस्या बन गई तथा नारी विमर्श समस्या मूलक'।[2]

वर्तमान हिन्दी साहित्य में भी 'स्त्री विमर्श' विविध और व्यापक रूप में बहुआयामी दृष्टिकोण से लिखा –पढ़ा, सोचा समझा और विचारा जा रहा है। जितना 'स्पेस' प्रगति , प्रयोगवादी साहित्य में लघुमानव या आम आदमी को दिया था शायद उससे भी अधिक 'स्पेस' वर्तमान साहित्य और चिन्तन में 'स्त्री' को मिल रहा है। आज के साहित्यकारों विशेषकर महिला साहित्यकारों की रचनाओं का मुख्य विषय तो 'स्त्री विमर्श' ही है। सुभद्रा कुमारी चौहान और महादेवी वर्मा से लेकर महाश्वेता देवी, अमृता प्रीतम, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, सुधा अरोड़ा, मृदुला गर्ग , प्रभा खेतान, राजी सेठ, नासिरा शर्मा, उषा किरण खान, तहमीना दुर्रानी, तस्लीमा नसरीन, मेहरून्निसा परवेज, रोहिणी अग्रवाल, अर्चना वर्मा, मैत्रेयी पुष्पा, जया जादवानी, शीबा फहमी आदि के अतिरिक्त एक लम्बी सूची है जिनके सृजनात्मक कर्म और वैचारिक चिन्तन के केन्द्र में 'स्त्री विमर्श' है। फिलहाल इस आलेख में अधिक विस्तार में न जाकर मेरा उद्देश्य प्रभा खेतान की एक कृति के बहाने 'स्त्री विमर्श' पर बातचीत का है।

प्रभा खेतान हिन्दी साहित्य जगत में एक लब्धप्रतिष्ठ नाम है। उपन्यास, कहानी, वैचारिक विमर्श, आलेख, संपादन, आत्मकथा इत्यादि साहित्य के अनेक रचना रूपों में न केवल सार्थक योगदान दिया अपितु उन्होंने अपनी एक विशिष्ट पहचान बनायी है। वे हिन्दी जगत में एक मात्र ऐसी लेखिका हैं जिनकी लेखनी पूरी तरह 'स्त्री मुक्ति' को समर्पित है। चाहे उनके उपन्यास 'आओ पेपे घर चलें', 'छिन्नमस्ता', 'अपने अपने चेहरे' हो या स्त्री विमर्श पर केन्द्रित पुस्तक 'उपनिवेश में स्त्री' 'शब्दों का मसीहाः सार्त्र' 'सार्त्र का अस्तित्वाद' हो या 'अन्या से अनन्या' अथवा दक्षिण अफ्रीकी कविताओं का अनुवाद 'साँकलों में कैद कुछ क्षितिज' हो 'हंस' के विशेषांक ' भूमण्डलीकरणः पितृ सत्ता के नये रूप' हो अथवा विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित वैचारिक आलेख या 'सीमेन द बोउवार' की प्रसिद्ध पुस्तक 'द सेकेन्ड सेक्स' का अनुवाद 'स्त्री' उपेक्षिता हो, सभी के केन्द्र में सदियों से सताई हुई दलित, शोषित और प्रताड़ित स्त्री है। 'स्त्री–मुक्ति' के वैचारिक संघर्ष में उनकी एक अति महत्वपूर्ण कृति "बाजार के बीचः बाजार के खिलाफ–भूमण्डलीकरण और स्त्री के प्रश्न" सन् 2004 में प्रकाशित हुई जो भूमण्डलीकरण के दौर में वैश्विक स्थितियों में बहुआयामी 'स्त्री विमर्श' का संग्रहणीय दस्तावेज है। "अपनी व्यावसायिक अतिव्यस्तताओं के बावजूद लेखिका ने विश्व के अनेक देशों में घूम घूम कर स्त्री की दशा और दिशा का स्वयं अवलोकन, अध्ययन किया है। उनको बड़े नजदीक से जाना समझा है। "उन संदर्भों में एशिया विशेषतः भारत के स्त्रियों की दशा का आकलन इस कृति को एक गम्भीर सामाजिक अध्ययन और स्त्री विमर्श के महत्वपूर्ण ग्रन्थ के रूप में प्रस्थापित करते हैं।[3] "स्त्री विमर्श" संबधी अनेक विश्व प्रसिद्ध रचनाओं का अध्ययन कर स्त्री दशा का तुलनात्मक विश्लेषण और अपने निष्कर्षों की बलपूर्वक स्थापना इस ग्रंथ की महती उपलब्धि है।

यह कृति छः खण्डों –एक : प्रश्नावली समय, दोः श्रम के स्त्रीकरण की हकीकत, तीनः यौन कर्म की कीमत, चारः घुमड़ते हुए बादल, पांचः भोग और भोगा जाना और छठाः बहुलतावादी रणनीति चाहिए, में विभाजित है। विश्व के अनेक सामाजिक संगठनों की गतिविधियों का अध्ययन, अनेक देशों के संगठनों की राजनैतिक बहसों , सम्मेलनों की रिपोर्ट आदि भी इस कृति में संकलित है। राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विमर्श से परिपूर्ण यह ग्रंथ पूरी तरह अन्त तक पठनीयता को बनाये रखता है। भूमंडलीकरण का आज के विश्व बाजार पर व्यापक प्रभाव पड़ा है।लेखिका का कहना है कि अब बाजार इस रूप में हावी होकर अर्थव्यवस्था का संचालन करता है कि स्थानीय संस्कृति तेजी से परिवर्तित होने लगी है। भूमण्डलीकरण का नकारात्मक परिणाम यह है कि कुछ प्रतिशत लोगों की आय में अकूत ढंग से बढ़ोत्तरी हुई है परन्तु गरीब और गरीब होता जा रहा है। स्त्रियों के संदर्भ में विचार करते हुए लेखिका का कहना है कि यद्यपि दुनिया काफी आगे जा चुकी है परन्तु स्त्री जीवन से सम्बन्धित आंकड़ों का अभाव है जिससे स्त्रियों पर होने वाले अध्ययनों , शोधकार्यों को असुविधा का सामना करना पड़ता है। इस ग्रन्थ में लेखिका ने विभिन्न स्रोतों से स्त्री जीवन विशेषकर कामगार औरतों एंव यौन कर्मी स्त्रियों से संबन्धित महत्वपूर्ण और पर्याप्त आँकड़े एकत्रित कर अपने अध्ययन एवं अपनी धारणाओं को संपुष्ट किया है।

भूमण्डलीकरण को एक तरह का 'नव पश्चिमीकरण' का रूप मानते हुए स्त्रियों पर पड़ने वाले इसके प्रभावों का विश्लेषण करते हुए लेखिका 'थॉमस फ्रीडमैन' की पुस्तक 'द लक्सेस एण्ड द ऑलिव ट्री' का संदर्भ देते हुए बताती हैं कि पश्चिमी समृद्धि और विलास का समाज जो दैहिक सुख प्रदान करता है, उसका आकर्षण अवश्यंभावी है, स्त्री को आकर्षण की यह दुनिया बड़ी तेजी से खींचती है। स्त्री की स्वतन्त्रता में परम्परा बाधक है। लेखिका का प्रश्न है कि यदि स्त्री इस बाधा से मुक्ति पा भी ले तो क्या वह उतना समृद्ध हो सकती है

जितना कि एक पुरूष। स्त्री–श्रम की ओर इंगित करते हुए लेखिका बताती है कि होटलों की अन्तर्राष्ट्रीय शृंखला में जो सेवा उद्योग पनप रहा है उसका मुख्य आधार 'स्त्री–श्रम' है। परन्तु अपने श्रम का उचित प्रतिदाय उसे नही मिलता है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में स्त्री की अधिकाधिक नियुक्ति का कारण सस्ता 'स्त्री–श्रम' है और थोड़ा बहुत श्रेय नारीवादी आन्दोलनों को भी दिया जा सकता है।

बहुराष्ट्रीयकरण और निजीकरण के कारण बदली हुई दुनिया में स्त्री की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति पर भी प्रभा खेतान विचार करती हैं –स्त्री दुनिया के काम काज के कुल घंटों में दो तिहाई समय काम करती है पर दुनिया की आय से उसे केवल एक बटा दसवां भाग ही मिलता है। भारत जैसे देशों में स्त्री को घर और बाहर दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है लेकिन क्या उसको उचित लाभ या मान मिलता है? शायद नही । कहने को श्रीलंका, भारत , पाकिस्तान, बंग्लादेश, इंडोनेशिया आदि देशों में शासन का नेतृत्व स्त्रियों के हाथ में रहा है। लेकिन ये अथवा अन्य महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत महिलाएं क्या तीसरी दुनिया की आम स्त्री को सामाजिक जीवन में पूरी तरह मुक्ति दिला सकी हैं? 'श्रम के स्त्रीकरण' के संदर्भ में औद्योगिक प्रतिष्ठानों में स्त्री श्रमिकों की वास्तविक दशा पर लेखिका ने गंभीरता से विचाार किया है और अपना स्पष्ट मत दिया है कि 'नव अर्थव्यवस्था' स्त्री को मुक्ति देने में समर्थ नही है। अभी भी भारतीय महिलाएं अपने पारम्परिक चौखटे में कैद हैं। स्त्री सेवा को श्रम का दर्जा नही दिया जाता है। लेखिका ने मशीनीकरण को भी स्त्री श्रम की दुर्दशा के लिए उत्तरदायी माना है।

पुस्तक के तीसरे और चौथे खण्ड में वेश्यावृत्ति और समलैंगिक सम्बन्धों पर विचार विमर्श किया गया है। वेश्या आज अपने यौन–कर्म की कीमत वसूलती हुई अपने को यौन–कर्मी (सेक्स–वर्कर) मानती है। वेश्या–वृत्ति आज एक पेशे के रूप मे फलफूल रहा है। 'नव बाज़ारवाद' ने सेक्स उद्योग को नयी प्रेरक शक्ति दी है। एशियाई देशों में देह व्यापार अधिक बढ़ रहा है। जिसका कारण लेखिका ने निर्धनता, सीमित शैक्षणिक अवसर, बिखरता परिवार, सामाजिक बहिष्कार और तेजी से पैसा कमाने की ललक माना है। समलैंगिकता पर विचार करने के लिए लेखिका ने स्त्री और पुरूष दोनों के समलैंगिकता व्यवहार और इतिहास का अध्ययन किया है। लेखिका का मानना है कि यह 'मुक्तिकारी–सेक्स' की अवधारणा 'प्लास्टिक सेक्सुअल्टी' को जन्म देती है। इसने प्रचलित नैतिकता को धराशायी कर दिया है। स्त्री–पुरूष सम्बन्धों में क्राान्तिकारी परिवर्तन उपस्थित हुआ है। टेस्ट ट्यूब बेबी, शुक्राणु बैंक, कृत्रिम गर्भाधान, सेरोगेट माँ, लिविंग रिलेशनशिप इत्यादि ने समाज में नये सामाजिक प्रयोगों का एक विशाल क्षेत्र खोल दिया है। इसने नैतिक और कानूनी अधिकारों के बारे में पुनः विचार करने को बाध्य कर दिया है।

अगला अध्याय विज्ञापन संस्कृति और वैश्वीकरण के चलते उपभोक्तावाद के भोगवादी स्वरूप का अध्ययन प्रस्तुत करता है। लेखिका का मानना है कि आज का बदला हुआ परिदृश्य नये किस्म के भोगवाद को बढ़ावा दे रहा है। स्त्रियाँ इस विज्ञापन तंत्र और ब्रांडिड बीमारी की शिकार ज्यादा होती हैं। आज नारी 'देह' के प्रति जितनी चौकन्नी है पहले उतनी कभी नही रही। नारीवादी स्त्रियाँ यदि वृहत्तर प्रश्नों और समस्याओं से हटकर शरीर केन्द्रित चर्चाओं में मशगूल हो जायेंगी, सौन्दर्य प्रसाधन सामग्रियों तक विचार विमर्श सीमित हो जायेगा तो स्त्री मुक्ति के सारे प्रयत्न बेमानी सिद्ध होगें। उपभोक्तावाद के स्त्री आन्दोलन पर प्रभाव का विवेचन करते हुए मत दिया है कि बाजार के सामने स्त्री मजबूर है। 'पूँजी और 'बाजार तंत्र' ने स्त्री को और अधिक दयनीय बना दिया है। आज 'बहुलतावादी रणनीति' की आवश्यकता है। स्त्री–शिक्षा और स्त्री की राजनीति में पूरी भागीदारी सुनिश्चित हो साथ ही ध्यान देने की बात यह है कि सामान्य और अधिसंख्यक स्त्री की सामाजिक दशा कितनी समुन्नत हो पा रही है। ''अधिकांश लेाग 'स्त्रीमुक्ति' का अर्थ देह मुक्ति से लगाते हैं, प्रेम करने की आजादी से लगाते हैं। स्त्रियों को देह मुक्ति से ज्यादा जोर देह नियंत्रण और देह अधिकार पर देना चाहिए।''[4]

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि 'बाजार के बीच : बाजार के खिलाफ' स्त्री विमर्श का गहन अध्ययन, विवेचन और विश्लेषण प्रस्तुत करता है। स्त्री के प्रति और उसके प्रश्नों, समस्याओं के प्रति लेखिका बिल्कुल स्पष्ट दृष्टिकोण रखती है और 'स्त्री विमर्श' के संदर्भ में अपनी मान्यताएँ और निष्कर्ष समुचित तर्कों और प्रमाणों के साथ प्रस्थापित करने का प्रयास किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *"बाजार के बीच : बाजार के खिलाफ – भूमण्डलीकरण और स्त्री के प्रश्न"– प्रभा खेतान। (वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2004)*

पाद टिप्पणी

1. *'जनसत्ता' 10 जून 2006 में प्रकाशित श्री भगवान सिंह का लेख।*
2. *आलेख 'बैटी फ्रीडन' : स्त्री संवाद एवं विवाद' वागर्थ जुलाई 2006, पेज –19 देवेन्द्र इस्सर ।*
3. *समीक्षा लेख–' स्त्री मुक्ति के संग्राम का वैश्विक पाठ' वागर्थ सितम्बर 2005, पेज 60– डॉ0 पुष्प पाल सिंह ।*
4. *'स्त्री भूमण्डलीकरण : पितृ सत्ता के नये रूप', 'हंस का विशेषांक (मार्च 2001) विशेष संपादक : प्रभा खेतान।*